आपने लिखा

संदर्भ के अंक-83 में उमा सुधीर के आलेख 'पदार्थ की प्रकृति के बारे में बच्चों के भ्रम' में जिस भ्रम की बात की है वे केवल बच्चों के ही नहीं वरन् बड़े बच्चों यानी शिक्षकों के भी हैं। विज्ञान शिक्षा के जो हाल हैं वे केवल भ्रम ही पैदा करते हैं। विज्ञान केवल किताबों और अध्यापकों की स्मरण शक्ति तक ही निर्भर रह गया है।

मैंने सितम्बर, 2012 में दिल्ली पुस्तक मेले से एकलव्य के स्टॉल से 'बचपन से पलायन' (लेखक - जॉन होल्ट) पुस्तक खरीदी थी। लेखक के विचार अमेरिका जैसे देश में तो कुछ हद तक विचारणीय हो सकते हैं। वो जिन स्वतंत्रताओं की बात बच्चों के लिए करते हैं वे भारत में वयस्कों को ही नहीं मिली हैं।

बच्चा, बचपन और माता-पिता, ये तीनों तत्व सारी दुनिया में एक जैसी भूमिका, एक जैसी परिस्थितियों और एक जैसी व्यवस्थाओं के अंग नहीं हैं। ना ही ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक इन्हें एक होने देंगे। इसीलिए जॉन होल्ट के विचार सार्वभौमिक सम्मान नहीं पा सकते। फिर भी बचपन और बड़ेपन के अन्तर्सम्बन्धों में और उदारता की ज़रूरत को समझने के लिए यह किताब काफी उपयोगी है।

एक बार फिर संदर्भ पत्रिका पर लौटता हूँ। विनोद गौड़ से सुजाता वरदराजन की बातचीत काफी रोचक और महत्वपूर्ण जानकारियाँ लिए है। भूगोल और विज्ञान के क्षेत्र में ऐतिहासिक प्रगति के बारे में इससे काफी ज्ञान मिला।

कार्टून विवाद महज़ एक राजनैतिक चालबाज़ी है। इन पाठ्य पुस्तकों के कार्टूनों से न तो पढ़ने वालों और न पढ़ाने वालों को ऐतराज़ था, न उनसे पूछा गया पर 'थोराट कमेटी' ने इन्हें हटाने की सिफारिश तुरत-फुरत कर डाली।

'स्कूल से जुड़े बच्चे' लेख RTE एक्ट के सन्दर्भ में एक घटना है जो इंगित करती है कि अगर योजना बिना पूर्व तैयारी के लागू की जाए तो क्रियान्वयन की दिक्कतों के कारण योजना के प्रति लोगों का नज़रिया नकारात्मक बन जाता है।

प्राथमिक स्कूलों में विविध तबकों से प्रविष्ट बच्चों के कारण इतनी अधिक विविधता बढ़ गई हैं कि शिक्षकों के सामने किंकर्तव्यविमूढ़ता के हालात बन रहे हैं। आवश्यकता है सभी शिक्षकों को उपयुक्त प्रशिक्षण की वरना लाभ के स्थान पर महज़ आँकड़ेबाज़ी का खेल रह जाएगा।

'संदर्भ' को फील्ड में जाकर और ज़्यादा गहराई वाली सामग्री देनी चाहिए जिससे शैक्षिक सुधारों का एक आन्दोलन खड़ा हो सके।

रमेश जांगिड़, शिक्षक
हनुमानगढ़, राजस्थान

भूल सुधार

- *अंक 84 में* 'क्या बादल का वज़न पता किया जा सकता है?' *लेख के पृष्ठ 49 पर प्रकाशित चित्र जितेन्द्र चौरसिया ने बनाया था।*
- '*सामाजिक विज्ञान के शैक्षणिक मुद्दों पर पुनर्विचार*' *(कुमकुम रॉय) लेख इकोनॉमिक एंड पॉलिटीकल वीकली पत्रिका से साभार।*
- *आइज़ेक एसीमोव का लेख* '*गलत, यानी कितना गलत?*' http://chem.tufts.edu/AnswersInScience/RelativityofWrong.htm *लिंक से साभार।*

— सम्पादक मण्डल